International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2022; 2(1): 24-27
www.educationjournal.info
Received: 15-11-2021
Accepted: 19-12-2021

मृदुला कुमारी भगत
शोधार्थीः शिक्षा विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड, भारत

Corresponding Author:
मृदुला कुमारी भगत
शोधार्थीः शिक्षा विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड, भारत

आधुनिक भारत के संदर्भ में डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता

मृदुला कुमारी भगत

सारांश
वर्ष 2010 में एम. एड. करने के पश्चात् मेरे अन्तर्मन में शोध कार्य करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई भारत की इस पावन भूमि पर सन्तो, ऋषियों, मनीषियों और शिक्षा विदों ने जन्म लेकर अपनी ज्ञान रश्मि से भारत को ही नहीं वरन सम्पूर्ण संसार को आलोकित किया है। इन्हीं महान दिव्य विमूतियों में एक दिव्य विभूति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् भी हैं। डॉ0 राधाकृषण् एक सन्त थे, ऋषि थे, मनीषी थे, दार्शनिक थे, शिक्षाविद् थे, राजनीतिज्ञ थे, समाज सुधारक थे और धर्मवेत्ता थे प्रस्तुत शोधकार्य ''आधुनिक भारत के संदर्भ में डॉ0 राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता'' पर किया गया है। इस शोध कार्य के लिए राधाकृष्णन् जी के दार्शनिक विचारों जैसे दर्शन का अर्थ, तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, धर्म दर्शन का शोधार्थी द्वारा अध्ययन किया गया। इसके साथ–साथ इस शोध कार्य हेतु राधाकृष्णन् जी के शिक्षा दर्शन, शिक्षा की आवश्यकता एवम् महत्व, शिक्षा का अर्थ, शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम, शिक्षक–शिक्षार्थी, संबंध, अनुशासन, शिक्षा का माध्यम आदि को आधार मानकर विश्लेषण किया गया है। शोधार्थी द्वारा निष्कर्ष रूप में यह देखा गया कि डॉ0 राधाकृष्णन् जी के शैक्षिक एवम् दार्शनिक विचारों का वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका है।

कूट शब्दः आधुनिक भारत, डॉ0 राधाकृष्णन, शैक्षिक दर्शन

प्रस्तावना
शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यह किसी भी समाज का दर्पण होता है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवम् कला–कौशल में वृद्धि एवम् व्यवहार में परिवर्त्तन किया जाता है और उसे सम्य, सुसंस्कृत एवम् योग्य नागरिक बनाया जाता है। प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर रहती है। जिस राष्ट्र में जैसी शिक्षा–व्यवस्था होगी, वैसा ही वह राष्ट्र तथा उसके नागरिक होंगे। सौभाग्यवश भारतीय ऋषियों, सन्तों और समाज सुधारकों ने समय–समय पर अपने देश की शिक्षा के लिए बहुत कुछ किया है। परन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि भारत की वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली मौकॉले द्वारा आरोपित एक विदेशी शिक्षा प्रणाली है। अतः आज इस बात की आवश्यकता है कि यदि हम वास्तविक अर्थों में दिल और दिमाग दोनों से परिपूर्ण भारतीय नागरिक चाहते हैं तो हमें प्रचलित शिक्षा–पद्धति की समीक्षा करके उसका उन्नमूलन करना होगा तथा उसके स्थान पर एक ऐसी शिक्षा–प्रणाली विकसित करनी होगी जिसका आधार भारतीय समाज, संस्कृति, दर्शन और धर्म हो। हमारे आज के बालक (छात्र) कल की धरोहर हैं। अतः यदि हमें भावी नागरिकों में भारतीय तथा राष्ट्रीयता के गुणों को विकसित करना है तो वर्त्तमान शिक्षा–पद्धति में परिवर्त्तन करना अनिवार्य है। हमारी नई शिक्षा नीति 2020 में भी भारतीय चिन्तक एवम् शिक्षाविद् शिक्षा के भारतीयकरण की माँग कर रहे हैं तथा समय की भी यही माँग है।

समस्या कथन
प्रस्तुत शोध का कथन है ''आधुनिक भारत के संदर्भ में डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता''

अध्ययन के उद्देश्य
1. डॉ. राधाकृष्णन् कृत मूल ग्रंथों के आधार पर उनके दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।
2. डॉ0 राधाकृष्णन् का शैक्षिक– जगत में महत्वपूर्ण योगदान का अध्ययन।
3. डॉ0 राधाकृष्णन् के शिक्षण संबंधी विचारों की वर्त्तमान में प्रासंगिकता का विवेचना करना।
4. डॉ0 राधाकृषणन् के शैक्षिकदर्शन का वर्त्तमान पाठ्यक्रम में महत्व की विवचेना करना।

अध्ययन की परिकल्पनाए
प्रस्तुत शोध कार्य दार्शनिक एवम् ऐतिहासिक है, इसलिए इसमें परिकल्पनाओं का निर्माण नहीं किया गया है।

साहित्य की समीक्षा

डॉ0 राधाकृष्ण नव्य वेदान्तीय दर्शन के अग्रदूत माने जाते हैं। उन्होंने तत्व मीमांसा और ज्ञान मीमांसा के क्षेत्र में प्राचीन मौलिक विचारों के अनुकूल नवीन दार्शनिक चिन्तन को व्यवस्थित किया, पाश्चात्य चिन्तनक्रम को भारतीय मत के साथ समन्वित किया और पाश्चात्य आलोचकों को सही प्रव्युत्तर देकर भारतीय शैक्षिक दर्शन की श्रेष्ठता को बनाये रखा।

डॉ0 राधाकृष्णन् स्वामी विवेकानन्द के हिन्दु दर्शन के प्रति विचारों से बहुत ही प्रभावित थे। उन्होंने अपनी योग्यता का प्रर्दशन शिक्षण और व्याचयानों में किया। 1916 में राधाकृष्णन् राजकीय कला महाविद्यालय राजसुन्दरी (आंध्र प्रदेश) में प्रोफेसर हो गये। 1918 में मैसूर विश्वविद्यालय में वे दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर नियुक्त हुये। तत्पश्चात् 1921 में किंग जार्ज चेयर ऑफ मेण्टल एण्ड मारल साइन्स के पद पर नियुक्त किए गए। यहीं पर उन्होंने भारतीय दर्शन के दो विशाल ग्रन्थों का प्रणयन किया। 1 मई 1931 को वे आन्ध्र विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त हुये। 1936 में तीन वर्ष के लिए राधाकृष्णन् आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में समालोचक प्रोफेसर के पद को सुशोमित किया। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने सन् 1939 में डॉ0 राधाकृष्णन् की प्रतिभा को देखते हुए उन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति के पद पर नियुक्त किया। जहाँ राधाकृष्णन् जी ने 10 वर्षों तक कार्य किया। 1940 में पटना विश्वविद्यालय, 1914 में आगरा विश्वविद्यालय और 1942 में गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में दिये गये दीक्षान्त भाषणें में राधाकृष्णन्जी ने अंग्रेजी की कटु आलोचना की। 1948 में राधाकृष्णनजी ने एक चुनौतीपूर्ण कार्य करते हुए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने जो प्रतिवेदन तैयार किया, वह भारतीय शिक्षा के इतिहास की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

डॉ0 राधाकृष्णन् के विचारानुसार– ''वर्त्तमान मानव विकास के विज्ञानमय कोष में है।'' विज्ञान की अनेक उपलब्धियाँ अतीत के उपलब्धियों से प्रबल एवम् प्रचुर है। यह भौतिकता का विकास है। वैाानिक प्रक्रिया में व्यक्ति–व्यक्ति और राष्ट्र के बीच पर्याप्त अन्तर है। या आन्नदमय कोष की स्थिति इससे बहुत उच्च है। यह सम्पूर्ण मानव जाति को समान मान्यता प्रदान करता है। मानवीय मूल्यों के विकास के लिए पदाथ या जड़ तत्व के प्रबोधन की आवश्यकता है। अतः चरम आनन्द की प्राप्ति हेतु सम्पूर्ण उपलब्ध साधनों को नियोजित करने की आवश्यकता हैं तदुपरान्त हम उपनिषदीय ज्ञान से आगे बढ़कर पूर्णता की स्थिति को प्राप्त कर सकेंगें तथा ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना का विकास प्रादुर्भाव हो सकेगा। यही शिक्षा का तथा जीवन का मूल दर्शन है।

हिन्दू धर्म के प्रति डॉ0 राधाकृष्णन् जी का विशेष लगाव रहा। कुछ पाश्चात् आलोचकों जैसे अन्डरखुड, स्वीटजर आदि ने हिन्दू धर्म को रूढ़िवादी, अंधविश्वासी और निरर्थक बताया। और हिन्दू धर्म की अपेक्षा इसाई धर्म को श्रेष्ठ बताया। राधाकृष्णजी ने हिन्दू धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि, ''धर्म चारों वर्णों के और चारों आश्रमों के द्वारा जीवन के चारों प्रयोजनों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) के सम्बनध में पालन करने योग्य मनुष्य का समूचना में पालन करने योग्य मनुष्य का समूचा कर्त्तव्य है। राधाकृष्णन् के शब्दों में, ''धर्म मनुष्य में जो कुछ सर्वोच्च है, वह हमें दे सकता है, वह रचनात्मक तत्व से हमारा सतत् सम्पर्क स्थापित कर सकता है। जिसकी अभिव्यक्ति जीवन है। धर्म व्यक्ति के विकास का अद्वितीय साधन है। राधाकृष्णन् ने धर्म को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साधन के रूप में स्वीकार किया है। धर्म ही मनुष्य की आध्यात्मिक औरनैतिक चेतना को जागृत कर उसके जीवन को सुव्यवस्थित करता है। उन्होंने हिन्दू धर्म के उस स्वरूप को प्रस्तुत किया जो वास्तव में मनुष्य को उच्च स्तर की ओर बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता है। वे हिन्दू धर्म को गत्यात्मक मानते थे। राधाकृष्णन् के अनुसार–धर्म का सार उन धर्म सिद्धान्तों में तथा धार्मिक मतों में, विधियों में तथा संस्कारों मे नहीं है, जिससे हममें से अनेकों को विरक्ति होती है, अपितु अनवरत तत्व ज्ञान में सनातन धर्म है।

पदार्थ, जीवन तथा चित्त का विश्लेषण करते हुए राधाकृष्णन कहते हैं कि पदार्थ एक विद्युत शक्ति है जो गतिशील है तथा सम्पूर्ण जड़ जगत परस्पर सम्बन्धित है। ज्ञानशास्त्रीय क्षेत्र में राधाकृष्णन् ने विभिन्न प्रकार के ज्ञानों का महत्व बतलाने के साथ–साथ उनकी सीमाएँ भी बतायी हैं। वे बुद्धि और कर्त को दार्शनिक विवेचन में आवश्यक मानते हैं। बुद्धि विश्लेषण के माध्यम से चलती है जबकि सत्य के ज्ञान के लिए संश्लेषण भी आवश्यक है। डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार मनुष्य सारतः चेतना है। चेतना दृष्टा है दृश्य नहीं है। मानव मनोवैज्ञानिक अन्वेषण और विश्लेषण का विषय नहीं है। बल्कि अनुभव का विषय है। मानव आत्मा की अभिलाषा है– प्रेम इच्छा आत्मा के वास के सूचक हैं। विश्व के सभी विचारकों में मतैक्य है कि इस आत्मा के रहस्य को जानना मनुष्य का धर्म है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि तथा दार्शनिक विधि को अपनाया जायेगा। इसके अंतर्गत डॉ0 राधाकृष्णन् की शिक्षा सम्बन्धी दार्शनिक विचारधारा का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।

डॉ0 राधाकृष्णन् की दार्शनिक विचारधारा

डॉ0 राधाकृष्णन् जी एक महान दार्शनिक थे। उन्होंने विभिनन दर्शनों का गहन अध्ययन करके अपने दार्शनिक चिन्तन में समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाया। पाश्चात्य चिन्तनक्रम को भारतीय चिन्तनक्रम के साथ समायोजित करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। जहाँ पाश्चात्य दर्शन का उद्देश्य दार्शनिक प्रश्नों के समाधान ढूँढने का है, वहीं भारतीय दर्शन का उद्देश्य उस अमूर्त चिन्तन से है, जिसके द्वारा आत्मा–परमात्मा, जीव–जगत, जन्म–मृत्यु तथा प्रकृति आदि का रहस्य मालुम किया जाता है। डॉ0 राधाकृष्णन् ने दर्शन की परिधि में कर्तशास्त्र, सौंदर्य–शास्त्र, समाज दर्शन, अध्यात्मक विद्या, कर्म सिद्धान्त, तत्व मीमासा, ज्ञान मीमांसा इन सभी का समावेश किया है।

डॉ0 राधाकृष्णन् पर शंकराचार्य के अद्वैतवाद का बहुत बड़ा प्रभाव है। उनके दार्शनिक विचारों में तत्व मीमांसा एवम् ज्ञान–मीमांसा की अवधारणाओं का बड़ा महत्व है। जिस प्रकार शंकराचार्य ने ब्रह्म तत्व को मूल तत्व माना है। और ब्रह्म से ब्रह्म के ही द्वारा इस ब्राह्मण्ड का निर्माण होता है और उसी के द्वारा इसमें नित्य दृश्य एवम् अदृश्य परिवर्त्तन होते रहते हैं। ईश्वर वह शाश्वत चेतना है जो वस्तु जगत में समावेश और व्यक्तिक्रमण करती है। डॉ0 राधाकृष्णन् के शब्दों में ब्रह्म ही एकमात्र परमार्थ–सत् है। उससे परे जगत में कोई भी वस्तु सत् नहीं है। ब्रह्म सर्वोच्च परिनिष्पन्न और निरपेक्ष हैं ब्रह्म सत्य ज्ञान और अन्नत है। डॉ0 राधाकृष्णन् ने ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसके दो लक्षण बताये है :–

1. स्वरूप लक्षण
2. तटस्थ लक्षण

इन दोनों लक्षणों के आधार पर ब्रह्म के दो रूप बनते हैं

1. निर्गुण या परब्रह्म
2. सगुण या अपर ब्रह्म

निर्गुण ब्रह्म निर्विकल्पक, निराकार और अवर्णनीय है। इसकी व्याख्या निषेधात्मक रूप से 'नेति–नेति' द्वारा की जा सकती है। भावात्मक रूप से उसकी अभिव्यक्ति नहीं हो सकती।

अपने सगुण रूप में ब्रह्म ईश्वर कहलाता है। उसकी अराधना की जाती है। जब हमारा प्रयोजन ज्ञान न होकर आराधना, उपासना होता है, तब हम सगुण ब्रह्म की कल्पना करते हैं। मायायुक्त ब्रह्म ही ईश्वर माना जाता हैं जब तक व्यक्ति अज्ञान के वशीभूत रहता है। तब तक उसके लिए विश्व, ईश्वर एवं माया वास्तविक रहते हैं। जैसे ही वह अज्ञान से मुक्त हो जाता है, वैसे ही वह सगुण ब्रह्म अर्थात् ईश्वर को मिथ्या मान लेता है। इस प्रकार पारमार्थिक दृष्टि से ब्रह्म निर्गुण है, अर्थात् व्यवहारिक दृष्टि से ब्रह्म यगुण है। बह्म सभी प्रकार के भेदों से रहित है। डॉ0 राधाकृष्णन् ने तीन प्रकार के भेद बताये हैं –

राधाकृष्णन् के अनुसार ब्रह्म सत्य होने के नाते सभी प्रकार के विरोधों से मुक्त है। विरोध दो प्रकार का होता है–

1. प्रत्यक्ष विरोध
2. संभावित विरोध

ब्रह्म प्रत्यक्ष विरोध और संभावित विरोध से शून्य है। डॉ0 राधाकृष्णन् मानव जीवन की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि मनुष्य को अपने अहम् से ऊपर उठकर सर्वोच्च आत्मा तक पहुँचना होगा। जब मनुष्य अपनी व्यक्तिगत सत्ता को भगवान के साथ एकाकार कर देता है, तब वह त्रिगुणात्मक प्रकृति से ऊपर उठ जाता है। और सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है। राधाकृष्णन् ने मानव जीवन के तीन मूल्य बताये हैं:–

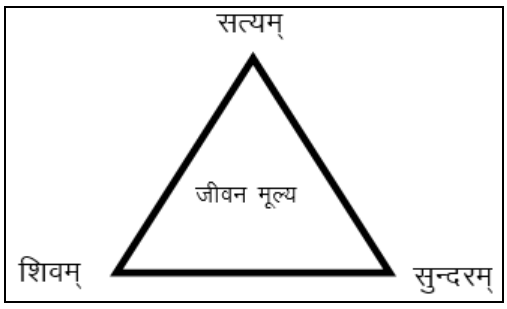

इन तीनों की प्राप्ति करना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए।

डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक दर्शन की आधुनिक भारत में प्रासंगिकता

आधुनिक भारत के संदर्भ में डॉ0 राधाकृष्णन् के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता की हम इस प्रकार चर्चा कर सकते हैं। राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा एक चिरन्तन प्रक्रिया है, जो शारीरिक और मानसिक दृष्टि से विकतिस, स्वतंत्र एवम् चेतनाभूत मानव का ईश्वर के प्रति अनुकूलन कराती है। इसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के बौद्धिक, संवेगात्मक और सामाजिक वातावरण में होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों और मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती है। शिक्षा सूचना देने एवम् कौशलों का प्रशिक्षण देने तक ही सीमित नहीं है, इसे व्यक्ति को मूल्यों के विषय में विचार करने के लिए भी प्रेरित करना है। राधाकृष्णन् के अनुसार अज्ञान (माया) से आवृत्त तथा मनुष्य में विद्यमान सत् (ब्रह्म) का अनावरण ही शिक्षा हैं शिक्षा वह है जो व्यक्ति में निहित ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की अनुभूति कराने में सहायक हो।

डॉ0 राधाकृष्णन् शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवम् आत्मिक विकास की प्रक्रिया मानते हैं तथा शिक्षा को ऐसा साधन मानते हैं, जो व्यक्ति और समाज को प्रगति देता है एवम् विकास को गति प्रदान करता है। डॉ0 राधाकृष्णन् मानते हैं कि ज्ञान व्यक्ति के अन्दर निहित है। स्वभावतः वह आत्मबोध करने में समर्थ है किन्तु ब्राह्म विषयों की आसक्ति से व्यक्ति का आत्म तत्व कलुषित रहता है। यही कारण है कि मनुष्य सर्वदा समीपस्थ होने पर भी उस आत्म तत्व का ढके हुये दर्पण के समान दर्शन नहीं कर पाता है। शिक्षा द्वारा जब व्यक्ति के इन्द्रिय एवम् विषयजन्य रोगादि दोषों के दूर हो जाने पर दर्पण या जल आदि के समान चित प्रसन्न–शान्त हो जाता है तब अज्ञान से आवृत तथा उसमें विद्यमान यथार्थ तत्व का अनावरण हो जाता है, यही उसकी शिक्षा है। शिक्षा के लिए केवल शिक्षक और शिक्षार्थी ही नहीं वरन् इसके लिए पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। इन तीनों के मध्य होने वाली अन्तः क्रिया को शिक्षा कहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा का स्वरूप आध्यात्मिक एवम् धार्मिक दोनों है। डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार आध्यात्मिक ज्ञान से भिन्न कोई शिक्षा नहीं है। शिक्षा की प्रासंगिकता इसमें भी है कि शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के लिए उपयोगी हो। व्यक्ति के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए उनका विचार है कि शिक्षा से मनुष्य को न्सजपउंजम जतनजी अन्तिम सत्य का ज्ञान होता है और मोक्ष की प्राप्ती होती है। अतः शिक्षा प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति का आचरण विचार तथा व्यवहार सुसंस्कृत हो जाते हैं। उसका जीवन उत्तरोत्तर उत्कृष्टतर हो जाता है, जिससे श्रेष्ठ समाज के निर्माण को बल मिलता है। श्रेष्ठ मानव समाज में ही एक उन्नत राष्ट्र समृद्ध तथा शान्तिमय विश्व की कल्पना निहित है। डॉ0 राधाकृष्णन् शिक्षा व ज्ञान को एक–दूसरे का पर्याय मानते हैं तथा शिक्षा को विकास के एक साधन के रूप में स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार शिक्षा शाश्वत जीवन की प्राप्ति का माध्यम है। शिक्षा के द्वारा नैतिक विकास संभव है तथा शिक्षा ही आत्म विकास करने का सबंल साधन है। शिक्षा के द्वारा ही समाज में सामाजिक, आर्थि, चारित्रिक, राजनैतिक विकास संभव है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि डॉ0 राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार आध्यात्मवाद है।

उपयोगिता

शिक्षक शिक्षार्थी के लिए शिक्षण प्रक्रिया के तीन चरण होते हैं– शिक्षक, पाठ्यक्रम और शिक्षार्थी। इन तीनों में सामंजस्य उत्पन्न होने पर ही उचित शिक्षा की प्राप्ति संभव हो पाती है। इसके लिए यह आवश्यक होता है कि पाठ्यक्रम कैसा हो? जो बालकों का सर्वांगीण विकास कर सके। कैसी शिक्षण विधि हो जो विद्यार्थी को रूचिकर लगे और दिये गये ज्ञान को विद्यार्थी आत्मसात् कर ले। इसके अलावा शिक्षक को व्यवहारकुशल होना चाहिये। क्योंकि शिक्षक विद्यार्थीयों का आर्दश होता हैं इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक का व्यवहार आर्दश प्रस्तुत करने वाला हो।

डॉ0 राधाकृष्णजी के शैक्षिक दर्शन के अन्तर्गत इन सभी बातों का अध्ययन किया गया हैं शिक्षण प्रक्रिया के अलावा शिक्षा का माध्यम, अनुशासन और शिक्षक–शिक्षार्थी कर्त्तव्यों का भी अध्ययन किया गया है।

भावी शोध हेतु सुझाव

वर्त्तमान अध्ययन में डॉ0 राधाकृष्णन् को महान शिक्षा दार्शनिक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। समय एवम् साधन की सीमाओं के कारण यह अध्ययन सीमित ही हैं अतः डॉ0 राधाकृषणन् के शिक्षा संबंधी विचारों का और अधिक अध्ययन होना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, ओ.पी. शिक्षा दर्शन एवम् शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. पचौरी, गिरीश भारतीय शिक्षा दर्शन, आर.लाल. पब्लिकेशन, मेरठ
3. सिंह, परमेश्वर प्रसाद, भारत के महान शिक्षा शास्त्री, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1997
4. राधाकृष्ण, सर्वपल्ली रचनात्मक जीवन, सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1979
5. राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव :भारत के महान शिक्षा शास्त्री, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1942
6. राधाकृष्णन् एस एजुकेशन पालिटिक्स एण्ड वार, पूना, 1942
7. राधाकृष्णन् एस भारत और विश्व, आलोक प्रकाशन, दिल्ली, 1949
8. बुच एम. बी. ''र्थड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'' बड़ौदा
9. राधाकृष्णन् एस भारत की अन्तरात्म, सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली, 2016
10. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, माध्यमिक शिक्षा आयोग रिर्पोट, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली–2015